तब वह बैताल बोला तू कौन है? और कहां लिये जाता है. राजा ने जवाब दिया कि मैं राजा बिक्रम हूं; तुझे योगी पास लिये जाता हूं. उसने कहा एक शर्त से चलता हूं; जो रस्ते में तू बोलेगा तो मैं उलटा फिर आऊंगा. राजा ने उसकी शर्त मानी और ले चला. फिर बैताल बोला ऐ राजा! पंडित, चतुर, बुद्धिमान लोग जो हैं, तिनके दिन तो गीत और शास्त्र के आनन्द में कटते हैं; और कूढ़ मूरखों के दिन कलकल और नींद में. इससे बिहतर यह है कि इतनी राह अच्छी बातों के चर्चे में कट जाय. ऐ राजा! जो मैं कथा कहता हूं उसे सुन.

पहली कहानी.

एक राजा प्रतापमुकट(१) नाम बनारसका था. और उस के बेटे का नाम बजरमुकट.(२) जिसकी नारीका नाम महादेवी. एक दिन कुंवर, अपने दीवान के बेटे को साथ ले, शिकार को गया; और बहुत दूर जंगल में जा निकला; और उस के बीच एक सुंदर तालाब देखा कि उस के कनारे हंस, चकवा, चकवी, बगले, मुर्गाबियां सब के सब कलोल में थे; चारों तरफ़ पुख़्तः घाट बने हुए; कंवल तालाब में

(१) प्रतापमुकुट.
(२) वज्रमुकुट.

फूले हुए; कनारों पर तरह बतरह के दरख़्त लगे हुए कि जिन की घनी घनी छांह में ठंढी ठंढी हवा आती थी; और पंछी पखेरू दरख़्तों पर चहचहों में थे; और रंग बरंग के फूल बन में फूल रहे थे; उन पर भौंरों के झुंड के झुंड गूंज रहे; कि ये उस तालाब के कनारे पहुंचे और मुंह हाथ धो कर, ऊपर आये.

वहां एक महादेव का मंदिर था. घोड़ों को बांध, मंदिर के अंदर जा, महादेव का दर्शन कर, बाहर निकले. जितनी देर उन को दर्शन में लगी, उतने अरसे में, किसू राजा की बेटी, सहेलियों का झुंड साथ लिये हुए, उसी तालाब के दूसरे कनारे पर अश्नान करने आई. सो अश्नान, ध्यान, पूजा कर सहेलियों को साथ लिये, दरख़्तों की छांह में टहलने लगी. इधर, दीवान का बेटा बैठा था; और राजा का बेटा फिरता था, कि अचानक उस की और राजा की बेटी की चार नज़रें हुईं. देखते ही उस के रूपको, राजा का बेटा फ़रेफ़्तः हुआ; और अपने दिल में कहने लगा कि ऐ चंडाल काम! मुझ को क्यों सताता है. और उस राजपुत्री ने उस कुंवर को देख, सिर में जो कंवल का फूल पूजा करके रक्खा था, वही फूल हाथ में ले, कान से लगा, दांत से कुतर, पांवतले दिया; फिर उठा छाती से लगा लिया; और सखियोंको साथ ले, सवार हो, अपने मकान को गई.

और यह राजपुत्र, निहायत निराश हो, बिरह में डूबा हुआ, दीवान के लड़के के पास आया; और साथ शर्म के

उस के आगे हक़ीक़त कहने लगा कि ऐ मित्र! मैं ने एक अति सुन्दरी नायका देखी; न उस का नाम जानता हूं, न ठांव. जो वह मुझे न मिलेगी तो मैं अपनी जान न रक्खूंगा; यह मैंने अपने जी में निश्चय विचारा है. यह अह्वाल दीवानका बेटा सुन, उसे सवार करवा घर को तो ले आया. पर राजा का बेटा, बिरह की पीर से, ऐसा बेकल था कि लिखना, पढ़ना, खाना, पीना, सोना, राज-काज सब कुछ तज बैठा. नक़्शा उस की मूरत का लिख लिख देखता और रोता. न अपनी कहता न और की सुनता.

दीवान के बेटे ने यह हालत उस की, जो बिरह से जुई थी, जब देखी तो उससे कहा कि जिसने इश्क़ की राह में क़दम रक्खा है, फिर वह जिया नहीं; और जो जिया तो उस ने बज़्त दुख पाया. इसवास्ते ज्ञानी लोग इस राह में पांव नहीं रक्खते. फिर, उस की बात सुन, राज-कुमार बोला मैंने तो इस पंथ में पांव दिया; इस में सुख हो, या दुख. जब ऐसा मज़बूत कलाम उसका सुना तब वह बोला कि महाराज! तुम से, चलते वक़्, कुछ उसने कहा था, या तुम ने कुछ उस से. फिर उस ने जवाब दिया कि न मैं ने कुछ कहा, न उस से कुछ सुना. तब दीवान का बेटा बोला उसका मिलना बज़्त मुश्किल है. उसने कहा जो वह मिली तो हमारी जान रही, नहीं तो गई

फिर उस ने पूछा कुछ इशारः किनायः भी किया था. कुंवर ने कहा जो उस ने हरकतें की थीं सो ये हैं; कि एका

एकी मुझ को देख, सिर पर से कंवल का फूल उतार, कान से लगा, दांत से कुतर, पांव तले देकर, छाती से लगा लिया. यह सुन, दीवान के बेटे ने कहा, उस के इशारों को हम समझे हैं; और नांव ठांव सब उसका जाना. वह बोला जो समझे हो सो बयान करो. यह कहने लगा; सुनो राजा! कंवल का फूल, सिर से उतार, कान से जो लगाया, तो गोया उन्ने तुम को बताया कि मैं करनाटक(१) की रहनेवाली हूं; और दांत से जो कुतरा, सो कहा कि दन्तवाट राजाकी बेटी हूं; और पांव से जो दबाया, सो कहा, पद्मावती मेरा नाम है; और फिर उठा छाती से जो लगाया, सो कहा तुम तो मेरे हृदय में बसे हो. जब इतनी बातें कुंवर ने सुनी तो उस से कहा, बिहतर यह है कि मुझे उस के शहर में ले चलो. यह कहतेही, कपडे पहन, हथयार बांध, कुछ जवाहिर ले, घोड़ों पर सवार हो, दोनों ने उस सिम्त की राह ली।

कई दिन के बअ्द, करनाटक देस में पहुंच, शहर की सैर करते हुये, राजा के महलों के नीचे आये तो वहां देखते क्या है कि एक बुढ़िया अपने दरवाज़े पर बैठी हुई चर्खा कातती है. ये दोनों, घोड़ों से उतर, उस पास जा, कहने लगे माई! हम मुसाफ़िर सौदागर हैं; माल हमारा पीछे आता है; और हम जगह ढूंढने के वास्ते आगे बढ़ आये हैं; जो हमें जगह दे तो हम रहें. बुढ़िया, उनकी सूरतों को देख, और बातों को सुन, रहम कर

(१) कर्णाट.

बोली, यह घर तुम्हारा है; जब तलक जी चाहे रहो. ग़रज़, यह सुन मकान में उतरे, तो कितनी एक देर के बअ़द, बुढ़िया मिहरबानी से उन पास आन बैठ बातें करने लगी. इस में दीवान के बेटे ने उस से पूछा, तेरी आल औलाद और कुनबे में कौन है, और क्योंकर गुज़रान होती है. बुढ़िया ने कहा बेटा मेरा राजा की ख़िदमत में बहुत अच्छी तरह से आसूदः है; और पद्मावती जो राज कन्या है, बंदी उसकी दूधपिलाई है. इस बुढ़ापे के आने से घर में रहती हूं. पर राजा मेरे खाने पीने की ख़बर लेता है. मगर उस लड़की के देखने को रोज़ एक वक़्त जाती हूं; वहां से आनकर, घर में ही अपना दुखड़ा किया करती हूं.

यह बात राजपुत्र ने सुन, दिल में ख़ुश हो, बुढ़िया से कहा कल जिस वक़्त जाने लगे तो एक संदेसा हमारा भी लेती जाइयो. उस ने कहा बेटा! कल पर क्या, मौक़ूफ़ है अभी मुझ से जो कुछ कहे सो मैं तेरा पैग़ाम पहुंचा दूं. तब उस ने कहा, तू इतना जाकर कहदे, कि जेठ सुदी पंचमी को, तालाब कनारे, जिस राजपुत्र को तुम ने देखा था, सो आन पहूंचा है.

इतनी बात के सुनतेही, बुढ़िया लाठी हाथ में लिये, राजमंदिर को गई. वहां जाकर देखा, कि राजकन्या अकेली बैठी है. जब यह साम्हने पहुंची, तो उस ने सलाम किया. यह असीस देकर बोली कि धीया! बालकपन में तेरी ख़िदमत की और दूध पिलाया; अब भगवान ने

तुझे बड़ा किया. यह जी चाहता है, कि तेरी जवानी का सुख देखूं, तो मुझे भी चैन होवे. इसी तरह की बातें महब्बत आमेज़ कर, कहने लगी कि जेठ सुदी पंचमी को, तालाब कनारे, जिस कुंवर का तू ने मन लिया है, सो मेरे घर आनकर उतरा है. उस ने तुझे यह संदेसा दिया है, कि जो हम से बचन किया था वह अब पूरा करो; हम आन पहुंचे हैं. और मैं भी यह कहती हूं, कि वह कुंवर तेरेही जोग है; जैसी तू रूपवती, वैसाही वह गुनवंत है.

ये सब बातें सुन, ख़फ़ा हो, हाथों में चंदन लगा, बुढ़िया के गालों में तमाचे मार, वह कहने लगी, कमबख़्त! मेरे घर से निकल. यह दिक़ हो, उसी तरह से उठती बैठती कंवर पास आई; और सब अपना अहवाल कहा. राजकुमार सुनकर हक्का बक्का हो गया. तब दीवान का बेटा बोला महाराज! कुछ फ़िक्र न कीजिये; यह बात आप के ध्यान में नहीं आई. फिर उस ने कहा सच है; पर तू मुझे समझा कि मेरे जी को चैन होवे. उस ने कहा जो दसों उंगलियां, संदल की भरकर, मुंह पर मारी, तो उन्ने यह बताया, कि दस रोज़ चांदनी के हो चुकें, तो अंधेरी में मिलूंगी.

ग़रज़, दस रोज़ के बअ़द, बुढ़िया ने उस की ख़बर फिर जा कही. तब उस ने, केसर से तीन उंगलियां भर, उस के गाल पर मारी; और कहा निकल मेरे घर से. आख़िर, बुढ़िया लाचार होकर वहां से चली; और जो कुछ ब्यौरा था, सो सब राजपुत्र से आकर कहा. यह सुनतेही, ग़म के दरया में डूब गया. उस का यह अहवाल देख, फिर

दीवान के बेटे ने कहा अंदेशः न कर; इस बात का मुद्दआ कुछ और है. वह बोला मेरा जी बेचैन है; मुझ से जलद कहो. तब उस ने कहा, वह उस हाल में है जो महीने महीने औरत का होता है; इस लिये, और तीन दिन का वअदः किया है; चौथे दिन वह तुम्हें बुलायगी. ग़रज़, जब तीन दिन हो चुके, तो बुढ़िया ने उस की तरफ़ से ख़ैर ओ आफ़ियत पूछी. तब उस ने बुढ़िया को, ख़फ़ा हो, पच्छम तरफ़ की खिड़की पास लाकर, निकाल दिया. फिर यह अहवाल बुढ़िया ने राजकुंवर से आकर कहा. वह सुनकर उदास हुआ. इतने में दीवान का पुत्र बोला, कि इस बात का ब्यौरा यह है, कि आज रात के वक़्त तुम को उसी खिड़की की राह बुलाया है. यह सुनतेही निहायत खुश हुआ. ग़रज़ जब वह वक़्त आया, जर्दे रंग के जोड़े निकाल, चुन बना पगड़ियां बांध, कपड़े पहन, हथयार सज, सजा तैयार हुए कि इस अरसे में दोपहर रात गुज़र गई. उस वक़्त एक आलम सुनसान का था, कि ये भी वहां से सूंट मारे चुपचाप चले जाते थे.

जब खिड़की पास पहुंचे, दीवान का बेटा बाहर खड़ा रहा, और यह खिड़की के अन्दर गया. देखता क्या है, कि राजकन्या भी वहीं खड़ी राह देखती है; कि इस में इन दोनों की चार नज़रें हुईं. तब राजकन्या हंसी, और खिड़की बंदकर, राजकंवर को साथ ले, रंगमहल में गई. वहां जाकर कुंवर देखता क्या है, कि जा बजा लखलखे रोशन और सहेलियां रंगारंग की पोशाकें पहने हाथ

बांधे बाअदब अपने अपने रुतबे से खड़ी हैं; एक तरफ़ सेज फूलों की बिछी है; अपने अपने क़रीने से अतरदान, पानदान, गुलाबपाशें चंगेरें चौघरे आरास्तः किये हुए धरे हैं; और एक तरफ़ चोआ, चन्दन, अरगजा, कस्तूरी, केसर कटोरियों में भरा हुआ धरा है; कहीं अच्छी अच्छी मअजूनों की रंगीन डिबियां चुनी हैं; कहीं भांति भांति के पकवान धरे हैं; तमाम दर ओ दीवार नक़्श ओ निगार से आरास्तः और उन पर ऐसी सूरतें बनी हुई हैं, कि हर एक देखतेही मस्त हो जावे. ग़रज़, सारे ऐस ओ तरब के साज़ ओ सामान मुहैया हैं. अजब समें का आलम है कि जिसका कुछ बयान नहीं हो सकता.

उसी मकान में रानी पद्मावती ने राजकंवर को ले जा बिठलाया; और पांव धुलवा, संदल बदन में लगा, फूलों के हार पहना, गुलाब छिड़क, पंखा अपने हाथ से झलने लगी. इस में कुंवर बोला, हम तुम्हारे देखने सेही ठंढे हुए; इतनी मिहनत क्यों करती हो; तुम्हारे ये नाज़ुक नाज़ुक हाथ पंखे के लायक़ नहीं; पंखा हमें दो, तुम बैठो. पद्मावती बोली, कि महाराज! आप बड़ी मिहनत करके हमारे वास्ते आये हैं; हमें आप की ख़िदमत करनी लाज़िम है. तब एक सहेली ने, रानी के हाथ से पंखा लेकर, कहा यह हमारा काम है; हम ख़िदमत करें; और तुम आपस में आनन्द करो. वे बाहम पान खाने लगे; और इख़तिलात की बातें करने; कि इतने में भोर हुई. राजकन्या ने उसे छिपा रक्खा. जब रात हुई,

तो फिर बाहम ऐश में मशगूल हुए. इसी तरह से कितने एक दिन बीत गये. राजकुंवर जब जाने का इरादः करे तो राजकन्या जाने न दे. इसी तरह से एक महीना गुज़र गया. तब तो राजा बहुत घबराया और फ़िक्रमंद हुआ.

एक रोज़ की बात यह है, कि रात के वक्त, अकेला बैठा हुआ, यह जी में चिन्ता करता था कि देस, राजपाट, घर सब कुछ तो छुटाही था; पर एक ऐसा दोस्त हमारा, कि जिसके बाइस से यह सुख पाया, उससे भी महीने भर से मुलाक़ात नहीं हुई. वह अपने जी में क्या कहता होगा; और क्या जानिये, उस पर कैसी गुज़रती होगी. इसी फ़िक्र में बैठा हुआ था, कि इतने में राजकन्या भी आन पहुंची; और उसकी हालत देखकर, पूछने लगी महाराज! तुम्हें क्या दुख है, जो तुम ऐसे उदास बैठे हो, मुझे कहो. तब वह बोला कि एक दोस्त हमारा बहुत प्यारा दीवान का बेटा है; उसका कुछ अहवाल, महीने भर से, मअलूम नहीं. वह ऐसा चतुर पंडित मिच है कि उसीके गुनों से मैंने तुझे पाया; और उन्हीं ने तेरा सब भेद बताया. राजकन्या बोली महाराज! तुम्हारा चित तो वहां है, तुम यहां सुख क्या करोगे. इससे बिहतर यह है, कि मैं पकवान मिठाई सब कुछ तैयार करके भिजवाती हूं; आप भी सिधारिये. उसको खिला, पिला, बहुतसी तसल्ली कर, खातिर जमअ से फिर आइये.

यह सुनतेही, राजकुंवर वहां से उठकर बाहर आया. और रानी ने बिष मिलवा तरह बतरह की मिठाई बनवा-

कर भिजवाई. कुंवर मन्त्री के पुत्र के पास जाकर बैठाही था, कि इतने में वह मिठाई आन पहुंची. प्रधान के बेटे ने पूछा महाराज! यह मिठाई किस तरह से आई. राजपुत्र बोला मैं वहां तेरी चिंता में उदास बैठा था, कि इतने में रानी ने आ, मेरी तरफ़ देखकर, पूछा उदास क्यों बैठे हो; कुछ सबब उसका बताओ. फिर, मैंने तेरे भेद चतुराई के सब उसे बयान किये. तब यह अहवाल सुनके उसने मुझे तेरे पास आने की इजाजत दी, और यह तेरे वास्ते भिजवाई; जो तू इसे खायगा, तो मेरा भी जी खुश होगा. तब प्रधान का बेटा बोला, तुम मेरे वास्ते ज़हर लाये हो. इसी में खैर हुई, कि आपने नहीं खाई. महाराज! एक बात मेरी सुनिये, कि रंडी अपने दोस्त के दोस्त को नहीं चाहती. आपने यह खूब न किया, जो मेरा नाम वहां लिया. यह सुन कुंवर बोला ऐसी बात तुम कहते हो जो कभी किसूसे नहो. अगर आदमी आदमी से न डरे, पर भगवान से तो डरेगा.

इतना कह, उसने उसमें से एक लड्डू कुत्ते के आगे डाल दिया. जोंहीं कुत्ते ने खाया, वोंहीं छटपटाके मर गया. यह तौर देख, राजपुत्र अपने जी में गुस्से हो, कहने लगा, ऐसी खोटी रंडी से मिलना लाज़िम नहीं. आज तक तो मेरे दिल में उसकी महब्बत थी; पर अब मअलूम. यह सुन दीवान का बेटा बोला महाराज! जो हुआ सो हुआ; अब वह बात किया चाहिये, जिससे उसको अपने घर ले चलिये. राजपुत्र बोला, भाई! यह भी

तुम्हीं से होगा. दीवान के बेटे ने कहा, आज एक काम कीजिये; फिर पद्मावती के पास जाइये, और जो कहूं सो कीजिये; पहले तो उस से जाकर बज़त सा इख़लास प्यार करो; जब वह सो जावे, तब उस का ज़ेवर उतार, यह चिशूल उस की बांईं जांघ में मार, वहां से तुरन्त चले आओ.

यह सुन राजकुमार रातको पद्मावती पास गया. और बज़त सी बातें दोस्ती की कर, दोनों मिलके सो रहे. लेकिन, बातिन में यह क़ाबू देखता था. ग़रज़, जब राजकन्या सो गई, तो उन्ने सारा गहना उतार लिया, और बांईं जांघ में चिशूल मार अपने मकान को चला आया. सारा अहवाल प्रधान के बेटे से बयानकर, सब गहना उसके आगे रख दिया. फिर वह ज़ेवर उठा, राजकुमार को साथ ले, योगी का भेष बना, एक मसान में जा बैठा. आप तो गुरू बना; और उसे चेला ठहराकर, उससे कहा तू बाज़ार में जाकर, इस गहने को बेच. अगर कोई इस में तुझे पकड़े, तो उसे मेरे पास ले आना.

उस की बात सुन, राजपुत्र ने ज़ेवर को ले, शहर में जा, मुत्तसिल राजा की डिऊढ़ी के एक सुनार को दिखाया. उस ने देखतेही, पहचानकर कहा यह राजकन्या का गहना है; सच कह तूने कहां पाया. यह उससे कह रहा था, कि दस बीस आदमी और भी इकठे हो गये. ग़रज़, कोतवाल ने यह ख़बर सुन, आदमी भेज, राजकुमार को मय ज़ेवर और सुनार पकड़वा मंगाया; और उस ज़ेवर को

देख, उससे पूछा कि सच कह तूने कहां से पाया. जब उस ने कहा कि मुझे गुरू ने बेचने को दिया है, पर मुझे मअ़लूम नहीं कि वे कहां से लाये, तब कोतवाल ने उस के गुरू को भी पकड़वा मंगाया; और दोनों को, ज़ेवर समेत, राजा के हुज़ूर में लाकर, तमाम अहवाल अ़र्ज़ किया.

यह माजरा सुन के, राजा योगी से पूछने लगा कि नाथजी! यह गहना तुम ने कहां से पाया. योगी बोला महाराज! काली चौदस की रात को मैं मरघट में डाकिनी मन्त्र सिद्ध करने को गया था. जब वह डाकिनी आई, तो मैंने उस का ज़ेवर और कपड़ा उतार लिया; और बांईं जांघ में उस की चिशूल का निशान कर दिया. इस तरह से यह गहना मेरे हाथ आया है. यह बात राजा योगी से सुन महल में गया; और योगी आसन पर. राजा ने रानी से कहा तू पद्मावती की बांईं जांघ में देख तो निशान है कि नहीं, और कैसा निशान है. रानी ने जाकर देखा तो चिशूल का दाग़ है; राजा से आकर कहा महाराज! तीन निशान बराबर हैं; पर ऐसे मअ़लूम होते हैं, गोया किसूने चिसूल मारा है.

यह बात सुन, बाहर आ, राजा ने कोतवाल को बुलवाकर कहा जाओ योगी को ले आओ. कोतवाल, हुकम पाते ही, योगी के लेने को गया. और राजा अपने मनमें चिंता करके कहने लगा कि अहवाल घर का, और दिल का इरादः, और जो कुछ नुक़सान हो, सो किसूके आगे ज़ाहिर करना मुनासिब नहीं; कि इतने में कोतवाल ने योगी को

ला हाज़िर किया. फिर योगी को राजा ने कनारे ले जा पूछा गुसाईं जी! धर्म्मशास्त्र में स्त्रीके वास्ते क्या दंड लिखा है. तब योगी बोला महाराज! ब्राह्मण, गौ, स्त्री, लड़का और जो कोई अपने आसरे में हों; अगर उन में जिस किसू से कुछ खोटा काम हो, तो उन के वास्ते यह दंड लिखा है कि देस निकाला दीजिये.

यह सुन के राजा ने पद्मावती को डोली में सवार करवा, एक जंगल में छुड़वा दिया. फिर अपने मक़ाम से राजकुमार और दीवान का बेटा दोनों घोड़ों पर सवार हो, उस बन में जा, रानी पद्मावती को साथ ले, अपने शहर को चले. बअ्द चंद रोज़ के दोनों अपने अपने बाप पास जा पहुंचे. सब छोटे बड़ों को निहायत ख़ुशी हुई; और ये बाहम ऐश करने लगे.

इतनी बात कह, बैताल ने राजा बीर बिक्रमाजीत (१) से पूछा, उन चारों में पाप किस को हुआ. जो तुम इस बात का न्याव न करोगे तो तुम नरक में पड़ोगे. राजा बिक्रम बोला, कि उस राजा को पाप हुआ. बैताल ने कहा राजा को किस तरह से पाप हुआ. बिक्रम ने यह उस को जवाब दिया, कि दीवान के बेटे ने तो अपने खाविंद का काम किया; और कोतवाल ने राजा का हुक्म माना; और राजकन्या ने अपना मक़सद हासिल किया. इससे यह पाप राजा को हुआ कि बिना बिचारे उसे देस निकाला दिया. इतनी बात राजाके मुंह से सुन बैताल उसी दरख़त पर जा लटका.

(२) विक्रमादित्य.

दूसरी कहानी.

राजा देखे, तो बैताल नहीं है. फिर उलटा फिरा, और उस जगह पहुंच, दरख़त पर चढ़, उस मुरदे को बांध, कांधे पर रख के ले चला. तब बैताल बोला, कि राजा! दूसरी कथा यों है,

कि यमुना के तीर, धर्म्मस्थल नाम एक नगर है; कि जहां का गुणाधिप नाम राजा. और वहां केशव नाम ब्राह्मण है कि वह यमुना के कनारे जप तप किया करता है. और उसकी बेटीका नाम मधुमावती.(१) वह बड़ी ख़ूबसूरत थी. जब ब्याहने योग हुई, तब उस के माता, पिता, भाई तीनों उसकी शादी की फ़िक्र में थे. इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ उसका बाप किसी अपने जजमान के साथ शादी में कहीं गया था; और भाई उसका एक रोज़ गांव में गुरुके यहां पढ़ने, कि पीछे उन के घर में एक ब्राह्मण का लड़का आया. उस की मा ने उस लड़के का गुण रूप देखकर कहा, मैं अपनी लड़की की शादी तुझ से करूंगी. और वहां ब्राह्मण ने एक बमनेटे को बेटी देनी क़बूल की. और उस के बेटे ने, जहां पढ़ने गया था, वहां एक ब्राह्मण से बचन हारा कि अपनी बहन तुझे दूंगा.

कितने दिनों के पीछे, वे दोनों उन दोनों लड़कों को साथ ले आये. और यहां तीसरा लड़का आगे से बैठा था.

(१) मधुमावती.